www.ijarp.com ISSN 2456-9992 Page: 01-10

International Journal Advanced Research Publications

Review Article

Volume: 02
Issue: 10

सम्राट अशोक की धम्मविजय, अहिंसा और धार्मिक सहिष्णुता का वर्तमान भारतीय विदेश नीति के संदर्भ में अध्ययन

रीतू[1], डॉ. यशपाल*[2]

[1]पी. एच. डी. शोध छात्रा, सम्राट अशोक सुभारती स्कूल ऑफ बुद्धिस्ट स्टडीज, स्वामी विवेकानंद सुभारती विश्वविद्यालय, मेरठ, उत्तर प्रदेश-250002

[2]सहायक आचार्य, भाषा विभाग, स्वामी विवेकानंद सुभारती विश्वविद्यालय, मेरठ, उत्तर प्रदेश-250002

Article Received: 13 September 2026, Article Revised: 03 October 2026, Published on: 23 October 2026

***Corresponding Author: डॉ. यशपाल**

सहायक आचार्य, भाषा विभाग, स्वामी विवेकानंद सुभारती विश्वविद्यालय, मेरठ, उत्तर प्रदेश-250002

Doi: https://doi-doi.org/101555/ijarp.5902

शोध सार

सम्राट अशोक की धम्मनीति प्राचीन भारतीय राजनीतिक एवं नैतिक चिंतन की एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। उनकी धम्मविजय, अहिंसा और धार्मिक सहिष्णुता की अवधारणाएँ शासन, सामाजिक सद्भाव तथा अन्य राज्यों के साथ शांतिपूर्ण संबंधों के संदर्भ में विशेष महत्त्व रखती हैं। कलिंग युद्ध के पश्चात् अशोक ने सैन्य विजय की अपेक्षा धम्मविजय को प्राथमिकता प्रदान की। उनके तेरहवें प्रमुख शिलालेख में युद्ध से उत्पन्न पीड़ा के प्रति पश्चात्ताप और नैतिक विजय की भावना अभिव्यक्त होती है। इसी प्रकार, बारहवें प्रमुख शिलालेख में विभिन्न धार्मिक संप्रदायों के प्रति सम्मान, सहिष्णुता और पारस्परिक सद्भाव पर बल दिया गया है। ये अभिलेख अशोक की नैतिक दृष्टि को समझने के प्रमुख ऐतिहासिक स्रोत हैं।

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य सम्राट अशोक की धम्मविजय, अहिंसा और धार्मिक सहिष्णुता के सिद्धांतों का अध्ययन करना तथा वर्तमान भारतीय विदेश नीति के संदर्भ में उनकी प्रासंगिकता का विश्लेषण करना है। आधुनिक भारतीय विदेश नीति में शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व, संवाद, अंतरराष्ट्रीय सहयोग, सांस्कृतिक संबंधों और वैश्विक शांति जैसे विषयों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। भारत की बौद्ध सांस्कृतिक विरासत भी विभिन्न देशों के साथ ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक संबंधों को सुदृढ़ करने में सहायक है। इस अध्ययन में ऐतिहासिक, वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति के माध्यम से अशोक के प्रमुख शिलालेखों, ऐतिहासिक ग्रंथों तथा भारतीय विदेश नीति से संबंधित स्रोतों का अध्ययन किया जाएगा। शोध में प्राचीन धम्मनीति और आधुनिक कूटनीति के बीच समानताओं के साथ-साथ उनके ऐतिहासिक, राजनीतिक

और व्यावहारिक अंतर को भी स्पष्ट किया जाएगा। यह अध्ययन इस तथ्य को रेखांकित करता है कि अशोक के नैतिक आदर्श आधुनिक भारतीय विदेश नीति के शांतिपूर्ण, सहिष्णुतापूर्ण और सहयोगात्मक आयामों को समझने के लिए एक महत्त्वपूर्ण वैचारिक आधार प्रदान करते हैं।

2. मुख्य शब्द: सम्राट अशोक, धम्मविजय, अहिंसा, धार्मिक सहिष्णुता, धम्मनीति, भारतीय विदेश नीति, शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व, अंतरराष्ट्रीय कूटनीति, सांस्कृतिक संबंध, वैश्विक शांति, नैतिक मूल्य, बौद्ध विरासत।

प्रस्तावना

सम्राट अशोक प्राचीन भारत के महान शासकों में से एक थे, जिन्होंने राजनीतिक शक्ति और साम्राज्य विस्तार के साथ-साथ नैतिक मूल्यों, अहिंसा, धार्मिक सहिष्णुता तथा जनकल्याण को भी विशेष महत्त्व प्रदान किया। मौर्य साम्राज्य के शासक के रूप में अशोक ने अपने शासनकाल में ऐसी नीतियों को प्रोत्साहित किया, जिनका उद्देश्य सामाजिक सद्भाव, नैतिक आचरण और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व को बढ़ावा देना था। कलिंग युद्ध के पश्चात् उनके विचारों में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन आया। युद्ध से उत्पन्न जनहानि और पीड़ा ने उन्हें सैन्य विजय की अपेक्षा धम्मविजय के महत्त्व पर विचार करने के लिए प्रेरित किया। अशोक के तेरहवें प्रमुख शिलालेख में कलिंग युद्ध के प्रति पश्चात्ताप तथा धम्मविजय की अवधारणा का उल्लेख मिलता है। इस प्रकार, उनकी धम्मनीति प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिंतन में नैतिकता और शासन के संबंध को समझने का एक महत्त्वपूर्ण आधार प्रस्तुत करती है।

अशोक की धम्मविजय का मूल भाव नैतिक आचरण, मानवीय संवेदना और सद्भाव के माध्यम से प्रभाव स्थापित करना था। उन्होंने युद्ध द्वारा प्राप्त विजय की तुलना में नैतिक मूल्यों पर आधारित विजय को अधिक महत्त्व दिया। उनकी यह दृष्टि राजनीतिक शक्ति के मानवीय पक्ष को उजागर करती है। इसी प्रकार, अहिंसा और धार्मिक सहिष्णुता उनके शासन के प्रमुख नैतिक आधार थे। अशोक के बारहवें प्रमुख शिलालेख में विभिन्न धार्मिक संप्रदायों के प्रति सम्मान, संयमित वाणी और पारस्परिक सद्भाव का संदेश मिलता है। इससे स्पष्ट होता है कि वे धार्मिक विविधता के बीच सम्मान और सहिष्णुता को सामाजिक शांति के लिए आवश्यक मानते थे। उनके धम्मलेख केवल प्रशासनिक आदेश नहीं थे, बल्कि वे नैतिक जीवन, सामाजिक उत्तरदायित्व और मानवीय संबंधों को दिशा देने वाले महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक दस्तावेज भी हैं।

वर्तमान समय में अंतरराष्ट्रीय संबंधों की प्रकृति अत्यंत जटिल हो गई है। विश्व के विभिन्न देश राजनीतिक प्रतिस्पर्धा, आर्थिक हितों, क्षेत्रीय संघर्षों, धार्मिक एवं सांस्कृतिक मतभेदों तथा सुरक्षा संबंधी चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। ऐसी परिस्थितियों में शांतिपूर्ण संवाद, पारस्परिक सम्मान, अंतरराष्ट्रीय

सहयोग और संघर्षों के समाधान के लिए कूटनीतिक प्रयासों का महत्त्व बढ़ जाता है। स्वतंत्रता के बाद भारत की विदेश नीति में शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व, गुटनिरपेक्षता, पंचशील, बहुपक्षीय सहयोग और विकासशील देशों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंधों को महत्त्वपूर्ण स्थान मिला है। समकालीन भारतीय विदेश नीति में राष्ट्रीय हितों की रक्षा के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय शांति, आर्थिक सहयोग, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और वैश्विक चुनौतियों के समाधान में सहभागिता भी महत्त्वपूर्ण है।

सम्राट अशोक की धम्मविजय, अहिंसा और धार्मिक सहिष्णुता का वर्तमान भारतीय विदेश नीति के संदर्भ में अध्ययन इसलिए प्रासंगिक है, क्योंकि इन सिद्धांतों के माध्यम से नैतिक मूल्यों और राजनीतिक व्यवहार के बीच संबंधों को समझा जा सकता है। अशोक की धम्मनीति और आधुनिक भारतीय कूटनीति के बीच शांतिपूर्ण संबंधों, सांस्कृतिक संवाद तथा पारस्परिक सम्मान जैसे विषयों पर वैचारिक समानताएँ दिखाई देती हैं। भारत की प्राचीन बौद्ध विरासत भी अनेक देशों के साथ सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक संबंधों को सुदृढ़ करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। बौद्ध धर्म से जुड़े ऐतिहासिक स्थलों, साहित्य, कला और सांस्कृतिक परंपराओं के माध्यम से भारत विभिन्न देशों के साथ सभ्यतागत संवाद को आगे बढ़ाता है। इस दृष्टि से अशोक की विरासत भारत की सांस्कृतिक कूटनीति को समझने का एक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक आधार प्रदान करती है।

हालाँकि, अशोक की धम्मनीति और वर्तमान भारतीय विदेश नीति को एक समान मानना उचित नहीं होगा। अशोक की नीतियाँ प्राचीन साम्राज्य की राजनीतिक एवं सामाजिक परिस्थितियों से संबंधित थीं, जबकि आधुनिक भारतीय विदेश नीति लोकतांत्रिक शासन, राष्ट्रीय सुरक्षा, आर्थिक विकास, अंतरराष्ट्रीय कानून और बदलते वैश्विक शक्ति-संतुलन से प्रभावित होती है। इसलिए दोनों का तुलनात्मक अध्ययन करते समय उनकी ऐतिहासिक परिस्थितियों और उद्देश्यों में निहित भिन्नताओं को ध्यान में रखना आवश्यक है। अशोक के नैतिक आदर्शों को आधुनिक विदेश नीति का प्रत्यक्ष आधार मानने के बजाय उन्हें भारतीय राजनीतिक एवं सांस्कृतिक चिंतन की ऐसी विरासत के रूप में देखा जाना चाहिए, जो शांति, सहिष्णुता और मानवीय उत्तरदायित्व पर विचार करने की प्रेरणा देती है।

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य सम्राट अशोक की धम्मविजय, अहिंसा और धार्मिक सहिष्णुता की अवधारणाओं का ऐतिहासिक एवं वैचारिक विश्लेषण करना तथा वर्तमान भारतीय विदेश नीति में उनकी प्रासंगिकता का अध्ययन करना है। इसके अंतर्गत अशोक के प्रमुख शिलालेखों में अभिव्यक्त नैतिक मूल्यों, भारत की शांतिपूर्ण कूटनीति, सांस्कृतिक संबंधों और अंतरराष्ट्रीय सहयोग के विभिन्न पक्षों का तुलनात्मक विवेचन किया जाएगा। साथ ही, यह समझने का प्रयास किया जाएगा कि समकालीन विश्व की चुनौतियों के संदर्भ में अशोक की नैतिक दृष्टि किस प्रकार उपयोगी वैचारिक मार्गदर्शन प्रदान कर सकती है। इस प्रकार, यह अध्ययन प्राचीन भारतीय नैतिक परंपरा और आधुनिक

भारतीय विदेश नीति के बीच संभावित संबंधों को स्पष्ट करते हुए शांति, अहिंसा, धार्मिक सहिष्णुता और वैश्विक सद्भाव के महत्त्व को रेखांकित करता है।

1. सम्राट अशोक की धम्मनीति की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

सम्राट अशोक प्राचीन भारत के मौर्य साम्राज्य के प्रमुख शासक थे। उनका शासनकाल भारतीय इतिहास में राजनीतिक एकीकरण, प्रशासनिक व्यवस्था तथा नैतिक शासन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण माना जाता है। अशोक के शासनकाल की सबसे उल्लेखनीय घटना कलिंग युद्ध थी, जिसने उनकी राजनीतिक और नैतिक दृष्टि को गहराई से प्रभावित किया। तेरहवें प्रमुख शिलालेख में कलिंग युद्ध से उत्पन्न जनहानि और पीड़ा के प्रति अशोक के पश्चात्ताप का उल्लेख मिलता है। इस घटना के बाद उन्होंने सैन्य विजय की अपेक्षा धम्मविजय को अधिक महत्त्व प्रदान किया।

अशोक की धम्मनीति का उद्देश्य केवल किसी विशेष धार्मिक परंपरा का प्रचार करना नहीं था, बल्कि समाज में नैतिक आचरण, करुणा, सहिष्णुता, बड़ों के प्रति सम्मान, सेवकों के प्रति उचित व्यवहार तथा प्राणियों के कल्याण को प्रोत्साहित करना भी था। उनके अभिलेखों में शासक के उत्तरदायित्व और प्रजा के कल्याण के प्रति संवेदनशीलता स्पष्ट दिखाई देती है। इस प्रकार, धम्म उनके शासन में नैतिक और सामाजिक आचरण का महत्त्वपूर्ण आधार बना।

अशोक की धम्मनीति का अध्ययन वर्तमान भारतीय विदेश नीति के संदर्भ में इसलिए उपयोगी है, क्योंकि यह राजनीतिक शक्ति के साथ नैतिक उत्तरदायित्व को जोड़ती है। आधुनिक अंतरराष्ट्रीय संबंधों में भी राष्ट्रीय हितों की रक्षा के साथ संवाद, सहयोग और शांतिपूर्ण संबंधों का महत्त्व स्वीकार किया जाता है। यद्यपि प्राचीन साम्राज्य और आधुनिक राष्ट्र-राज्य की परिस्थितियाँ भिन्न हैं, फिर भी अशोक की नैतिक दृष्टि और आधुनिक कूटनीति के बीच तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

2. धम्मविजय की अवधारणा और उसका महत्त्व

धम्मविजय अशोक की राजनीतिक एवं नैतिक विचारधारा की प्रमुख अवधारणा है। सामान्यतः विजय का अर्थ युद्ध, सैन्य शक्ति और क्षेत्रीय विस्तार से लगाया जाता है, लेकिन अशोक ने नैतिक प्रभाव, सदाचार और धम्म के माध्यम से विजय प्राप्त करने को महत्त्व दिया। कलिंग युद्ध के बाद उनका दृष्टिकोण इस विचार को अभिव्यक्त करता है कि राजनीतिक सफलता का मूल्यांकन केवल जीते गए क्षेत्रों से नहीं, बल्कि उसके मानवीय परिणामों से भी किया जाना चाहिए।

अशोक के तेरहवें प्रमुख शिलालेख में धम्मविजय का उल्लेख मिलता है। इसमें कलिंग युद्ध से उत्पन्न पीड़ा के प्रति संवेदना तथा नैतिक विजय को प्राथमिकता देने की भावना व्यक्त हुई है। इस अभिलेख से

यह समझने में सहायता मिलती है कि अशोक युद्ध के परिणामों पर विचार करते हुए शासक के नैतिक दायित्व को महत्त्व देते थे।

वर्तमान भारतीय विदेश नीति में धम्मविजय के साथ वैचारिक समानता उन प्रयासों में देखी जा सकती है, जिनके माध्यम से भारत संवाद, सांस्कृतिक आदान-प्रदान, आर्थिक सहयोग और विकासात्मक साझेदारी द्वारा अन्य देशों के साथ संबंधों को मजबूत करता है। आधुनिक कूटनीति में किसी देश का प्रभाव केवल सैन्य शक्ति पर निर्भर नहीं करता, बल्कि उसकी आर्थिक क्षमता, सांस्कृतिक विरासत, अंतरराष्ट्रीय सहयोग और विश्वसनीयता भी महत्त्वपूर्ण होती है।

भारत विभिन्न देशों के साथ राजनीतिक संवाद, व्यापार, शिक्षा, प्रौद्योगिकी और सांस्कृतिक सहयोग के माध्यम से संबंध विकसित करता है। इन गतिविधियों का विश्लेषण करते समय धम्मविजय को नैतिक प्रभाव और शांतिपूर्ण संबंधों की ऐतिहासिक अवधारणा के रूप में समझा जा सकता है। हालाँकि, आधुनिक भारतीय विदेश नीति को केवल अशोक की धम्मविजय से उत्पन्न मानना उचित नहीं होगा, क्योंकि वर्तमान कूटनीति राष्ट्रीय हितों, सुरक्षा संबंधी आवश्यकताओं और अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों से भी प्रभावित होती है।

3. अहिंसा का सिद्धांत और शांतिपूर्ण कूटनीति

अहिंसा भारतीय नैतिक एवं दार्शनिक परंपरा का एक महत्त्वपूर्ण सिद्धांत है। अशोक की धम्मनीति में जीवों के प्रति दया, हिंसा को सीमित करने तथा युद्ध से उत्पन्न पीड़ा के प्रति संवेदनशीलता पर बल दिया गया। कलिंग युद्ध के पश्चात् उनका पश्चात्ताप इस बात का संकेत देता है कि उन्होंने सैन्य विजय के मानवीय परिणामों को गंभीरता से समझा।

अशोक की अहिंसा को केवल व्यक्तिगत आचरण तक सीमित नहीं किया जा सकता। उनके शासन में यह विचार राजनीतिक व्यवहार और जनकल्याण से भी जुड़ा हुआ दिखाई देता है। उन्होंने नैतिक आचरण को प्रोत्साहित करने के लिए अभिलेखों का उपयोग किया तथा प्रशासनिक अधिकारियों को जनहित से संबंधित उत्तरदायित्व सौंपे। इससे स्पष्ट होता है कि उनकी दृष्टि में शासक का दायित्व केवल सत्ता का संचालन करना नहीं, बल्कि प्रजा के कल्याण के प्रति संवेदनशील रहना भी था।

आधुनिक भारतीय विदेश नीति में अहिंसा की भावना का संबंध शांतिपूर्ण समाधान, कूटनीतिक संवाद और अंतरराष्ट्रीय सहयोग जैसे उपायों से जोड़ा जा सकता है। स्वतंत्रता के बाद भारत ने शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व और विवादों के समाधान के लिए वार्ता को महत्त्व दिया। पंचशील के सिद्धांतों ने भी अंतरराष्ट्रीय संबंधों में संप्रभुता के सम्मान, अनाक्रमण तथा शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व पर बल दिया।

फिर भी, अहिंसा और आधुनिक विदेश नीति के बीच संबंधों का विश्लेषण करते समय यह ध्यान रखना आवश्यक है कि आधुनिक राष्ट्रों को अपनी सुरक्षा, संप्रभुता और नागरिकों की रक्षा भी करनी होती है। इसलिए अहिंसा की प्रासंगिकता का अर्थ सभी परिस्थितियों में सुरक्षा संबंधी उपायों का निषेध नहीं, बल्कि विवादों के समाधान में शांतिपूर्ण साधनों, संवाद और मानवीय परिणामों को महत्त्व देना है।

4. धार्मिक सहिष्णुता और पारस्परिक सम्मान

अशोक के धम्मलेखों में धार्मिक सहिष्णुता का विशेष महत्त्व है। उनके बारहवें प्रमुख शिलालेख में विभिन्न धार्मिक संप्रदायों के प्रति सम्मान, संयमित वाणी तथा दूसरे संप्रदायों की अनुचित निंदा से बचने का संदेश मिलता है। यह विचार दर्शाता है कि सामाजिक सद्भाव बनाए रखने के लिए अपने विचारों के प्रति निष्ठा के साथ-साथ दूसरों की मान्यताओं का सम्मान करना भी आवश्यक है।

अशोक की धार्मिक सहिष्णुता को आधुनिक समय में सांस्कृतिक विविधता और अंतरराष्ट्रीय संवाद के संदर्भ में समझा जा सकता है। विश्व में विभिन्न धर्मों, भाषाओं, परंपराओं और राजनीतिक व्यवस्थाओं वाले देश एक-दूसरे के साथ संबंध स्थापित करते हैं। ऐसे में पारस्परिक सम्मान और संवाद अंतरराष्ट्रीय संबंधों को स्थिर तथा सहयोगपूर्ण बनाने में सहायक हो सकते हैं।

आधुनिक भारतीय विदेश नीति में भारत विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं वाले देशों के साथ संबंध बनाए रखता है। भारत की सांस्कृतिक कूटनीति में बौद्ध विरासत, ऐतिहासिक संपर्क, सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा शैक्षिक आदान-प्रदान महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस दृष्टि से अशोक के धम्मलेखों में अभिव्यक्त सहिष्णुता और सम्मान के सिद्धांत आधुनिक सांस्कृतिक संबंधों के अध्ययन के लिए उपयोगी आधार प्रदान करते हैं।

धार्मिक सहिष्णुता का अर्थ मतभेदों का पूर्णतः समाप्त हो जाना नहीं है, बल्कि मतभेदों के बावजूद सम्मानपूर्वक संवाद बनाए रखना है। आधुनिक कूटनीति में भी देशों के बीच राजनीतिक और आर्थिक मतभेद हो सकते हैं, फिर भी वार्ता और सहयोग के माध्यम से साझा हितों की खोज की जा सकती है। इस प्रकार अशोक की सहिष्णुता की अवधारणा अंतरराष्ट्रीय संबंधों में संवाद और पारस्परिक सम्मान के महत्त्व को समझने में सहायक है।

5. पंचशील और अशोक की धम्मनीति का तुलनात्मक अध्ययन

भारत की आधुनिक विदेश नीति में पंचशील के सिद्धांतों को विशेष स्थान प्राप्त है। इन सिद्धांतों का औपचारिक विकास आधुनिक अंतरराष्ट्रीय संबंधों के संदर्भ में हुआ। इनमें एक-दूसरे की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता का सम्मान, अनाक्रमण, आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करना, समानता एवं पारस्परिक लाभ तथा शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व शामिल हैं।

अशोक की धम्मनीति और पंचशील के बीच शांति, सम्मान तथा शांतिपूर्ण संबंधों के स्तर पर कुछ वैचारिक समानताएँ दिखाई देती हैं। अशोक ने धम्मविजय के माध्यम से नैतिक प्रभाव को प्राथमिकता दी, जबकि पंचशील राज्यों के पारस्परिक संबंधों के लिए सिद्धांत प्रस्तुत करता है। दोनों के अध्ययन से यह समझने में सहायता मिलती है कि शांति और सम्मान भारतीय राजनीतिक चिंतन तथा विदेश नीति के विमर्श में महत्त्वपूर्ण विषय रहे हैं।

हालाँकि, दोनों के ऐतिहासिक संदर्भ अलग हैं। अशोक की धम्मनीति एक प्राचीन साम्राज्य के शासक की नैतिक एवं प्रशासनिक नीति थी, जबकि पंचशील आधुनिक संप्रभु राज्यों के पारस्परिक संबंधों से संबंधित है। इसलिए पंचशील को अशोक की धम्मनीति का प्रत्यक्ष विस्तार मानने के बजाय दोनों के बीच व्यापक वैचारिक समानताओं का तुलनात्मक अध्ययन करना अधिक उपयुक्त है।

6. बौद्ध विरासत और भारत की सांस्कृतिक कूटनीति

सम्राट अशोक की विरासत भारत की सांस्कृतिक पहचान का महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। अशोक ने बौद्ध धर्म और नैतिक मूल्यों के प्रसार में उल्लेखनीय भूमिका निभाई। उनके शासनकाल में बौद्ध परंपरा से जुड़े स्मारकों, स्तूपों और अभिलेखों का विकास हुआ। उनके शिलालेख आज भी प्राचीन भारत के राजनीतिक, सामाजिक और नैतिक विचारों के अध्ययन के प्रमुख स्रोत हैं।

आधुनिक भारत में बौद्ध विरासत सांस्कृतिक कूटनीति का एक महत्त्वपूर्ण आधार है। भारत का बौद्ध परंपरा से जुड़ा ऐतिहासिक संबंध श्रीलंका, नेपाल, म्यांमार, थाईलैंड, भूटान, जापान, दक्षिण कोरिया और अन्य देशों के साथ सांस्कृतिक संवाद के अवसर प्रदान करता है। बौद्ध तीर्थस्थलों, ऐतिहासिक स्मारकों, विश्वविद्यालयों, शोध संस्थानों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से भारत इस साझा विरासत को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रस्तुत करता है।

अशोक की विरासत इस सांस्कृतिक संवाद को ऐतिहासिक गहराई प्रदान करती है। उनके धम्मलेख और धम्मविजय की अवधारणा यह समझने में सहायता करते हैं कि प्राचीन भारत में नैतिक विचारों और सांस्कृतिक संपर्कों को किस प्रकार महत्त्व दिया गया। आधुनिक कूटनीति में इस विरासत का उपयोग सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत करने और शैक्षिक एवं धार्मिक आदान-प्रदान को प्रोत्साहित करने के लिए किया जा सकता है।

फिर भी, सांस्कृतिक कूटनीति केवल अतीत की विरासत पर निर्भर नहीं करती। इसके लिए समकालीन सहयोग, अनुसंधान, सांस्कृतिक कार्यक्रम, पर्यटन, शिक्षा तथा पारस्परिक हितों को भी महत्त्व देना आवश्यक है। इस प्रकार अशोक की विरासत आधुनिक भारत के सांस्कृतिक संबंधों को समझने का एक महत्त्वपूर्ण साधन है।

7. अशोक की धम्मनीति और अंतरराष्ट्रीय सहयोग

अशोक की धम्मनीति में जनकल्याण, करुणा और प्रशासनिक उत्तरदायित्व को महत्त्व दिया गया। उनके दूसरे प्रमुख शिलालेख में मनुष्यों और पशुओं के लिए चिकित्सा तथा औषधीय पौधों से संबंधित व्यवस्थाओं का उल्लेख मिलता है। इससे पता चलता है कि अशोक शासन को केवल राजनीतिक नियंत्रण तक सीमित नहीं मानते थे, बल्कि कल्याणकारी उपायों को भी महत्त्व देते थे।

आधुनिक भारतीय विदेश नीति में विकासात्मक साझेदारी, मानवीय सहायता, स्वास्थ्य सहयोग, शिक्षा, तकनीकी प्रशिक्षण और आपदा राहत जैसे क्षेत्र अंतरराष्ट्रीय सहयोग के महत्त्वपूर्ण अंग हैं। इन पहलों के माध्यम से भारत विभिन्न देशों के साथ सहयोग करता है और साझा समस्याओं के समाधान में योगदान देने का प्रयास करता है।

अशोक की लोककल्याणकारी दृष्टि और आधुनिक भारत की विकासात्मक साझेदारी के बीच एक वैचारिक तुलना की जा सकती है। दोनों संदर्भों में कल्याण और मानवीय आवश्यकताओं को महत्त्वपूर्ण माना जा सकता है, लेकिन उनके कार्यक्षेत्र और संस्थागत व्यवस्थाएँ अलग हैं। अशोक का कल्याणकारी दृष्टिकोण उनके साम्राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था से संबंधित था, जबकि आधुनिक विकासात्मक सहयोग संप्रभु देशों, अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं और बहुपक्षीय समझौतों के संदर्भ में संचालित होता है। इस तुलना से यह स्पष्ट होता है कि मानवीय कल्याण और सहयोग को शासन तथा अंतरराष्ट्रीय संबंधों में महत्त्व देना एक उपयोगी नैतिक दृष्टिकोण है। अशोक की धम्मनीति इस विषय पर ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य प्रदान करती है।

8. वर्तमान भारतीय विदेश नीति में नैतिक मूल्यों की भूमिका

आधुनिक भारतीय विदेश नीति राष्ट्रीय हितों, सुरक्षा, आर्थिक विकास, क्षेत्रीय स्थिरता और अंतरराष्ट्रीय सहयोग के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करती है। इसके साथ ही, शांति, संवाद, सांस्कृतिक संबंध और वैश्विक कल्याण जैसे विषय भी विदेश नीति के विमर्श में महत्त्वपूर्ण हैं। इन विषयों का अशोक की धम्मनीति के संदर्भ में अध्ययन भारत की ऐतिहासिक वैचारिक परंपरा को समझने का अवसर प्रदान करता है।

अशोक की धम्मविजय यह प्रश्न सामने रखती है कि राजनीतिक प्रभाव केवल सैन्य शक्ति से ही स्थापित होता है या नैतिक आचरण, सांस्कृतिक संबंध और सहयोग भी इसमें भूमिका निभाते हैं। आधुनिक कूटनीति में आर्थिक क्षमता, तकनीकी प्रगति, सांस्कृतिक प्रभाव और विश्वसनीय अंतरराष्ट्रीय साझेदारी किसी देश की भूमिका को प्रभावित कर सकती है। इस दृष्टि से अशोक की धम्मविजय और आधुनिक कूटनीति के बीच गैर-सैन्य प्रभाव के महत्त्व पर तुलनात्मक विमर्श संभव है।

इसी प्रकार, धार्मिक सहिष्णुता और अहिंसा के सिद्धांत अंतरराष्ट्रीय विवादों में संवाद, सम्मान और मानवीय संवेदनशीलता की आवश्यकता को रेखांकित करते हैं। यद्यपि विदेश नीति में नैतिक आदर्शों को लागू करना हमेशा सरल नहीं होता, क्योंकि देशों के हित और सुरक्षा संबंधी आवश्यकताएँ अलग-अलग होती हैं, फिर भी नैतिक मूल्यों का अध्ययन कूटनीतिक निर्णयों के मानवीय परिणामों को समझने में सहायता कर सकता है।

9. समकालीन वैश्विक चुनौतियों के संदर्भ में अशोक के विचारों की प्रासंगिकता

वर्तमान विश्व युद्ध, क्षेत्रीय संघर्ष, धार्मिक असहिष्णुता, आर्थिक असमानता, पर्यावरणीय संकट और मानवीय समस्याओं जैसी अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा है। ऐसी परिस्थितियों में अशोक के धम्मलेखों में निहित करुणा, संयम, सहिष्णुता और युद्ध के प्रति संवेदनशीलता जैसे मूल्य महत्त्वपूर्ण नैतिक दृष्टिकोण प्रदान करते हैं।

धम्मविजय यह विचार प्रस्तुत करती है कि किसी राजनीतिक निर्णय का मूल्यांकन उसके मानवीय परिणामों के आधार पर भी किया जाना चाहिए। आधुनिक कूटनीति में यह दृष्टिकोण संघर्षों को कम करने, मानवीय सहायता उपलब्ध कराने और संवाद के अवसरों को बनाए रखने के महत्त्व पर विचार करने में सहायक हो सकता है।

धार्मिक सहिष्णुता का सिद्धांत विभिन्न समुदायों और देशों के बीच सम्मानपूर्ण संवाद की आवश्यकता को सामने लाता है। वैश्विक स्तर पर सांस्कृतिक और धार्मिक विविधता को समझना अंतरराष्ट्रीय सहयोग को मजबूत करने में सहायक हो सकता है। इसी प्रकार, अहिंसा का नैतिक आदर्श युद्ध और हिंसा से उत्पन्न मानवीय पीड़ा के प्रति संवेदनशील दृष्टिकोण विकसित करने की प्रेरणा देता है।

फिर भी, अशोक के विचारों को वर्तमान विश्व की सभी समस्याओं का प्रत्यक्ष समाधान नहीं माना जा सकता। आधुनिक अंतरराष्ट्रीय संबंधों में राजनीतिक प्रतिस्पर्धा, सुरक्षा संबंधी चिंताएँ और आर्थिक हित भी महत्त्वपूर्ण हैं। अशोक की प्रासंगिकता मुख्यतः इस बात में है कि उनके विचार राजनीतिक शक्ति के प्रयोग में नैतिकता, मानवीयता और शांति के महत्त्व पर विचार करने का अवसर प्रदान करते हैं।

निष्कर्ष

सम्राट अशोक की धम्मविजय, अहिंसा और धार्मिक सहिष्णुता का अध्ययन प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिंतन में नैतिक मूल्यों की भूमिका को स्पष्ट करता है। उनके तेरहवें प्रमुख शिलालेख में कलिंग युद्ध के प्रति पश्चात्ताप तथा धम्मविजय की अवधारणा और बारहवें प्रमुख शिलालेख में धार्मिक सहिष्णुता का संदेश उनकी नैतिक दृष्टि के प्रमुख उदाहरण हैं। इन अभिलेखों से यह समझने में सहायता मिलती है

कि अशोक ने शासन और सामाजिक जीवन में नैतिक आचरण, सहिष्णुता तथा जनकल्याण को महत्त्व दिया।

वर्तमान भारतीय विदेश नीति के संदर्भ में इन मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन शांति, संवाद, सांस्कृतिक कूटनीति और अंतरराष्ट्रीय सहयोग के महत्त्व को समझने में सहायक है। भारत की बौद्ध विरासत विभिन्न देशों के साथ सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत करने का अवसर प्रदान करती है, जबकि आधुनिक कूटनीति में राष्ट्रीय हितों, सुरक्षा और आर्थिक आवश्यकताओं की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती है।

अतः अशोक की धम्मनीति की समकालीन प्रासंगिकता उसके नैतिक आदर्शों को आधुनिक परिस्थितियों के संदर्भ में समझने में निहित है। धम्मविजय, अहिंसा और धार्मिक सहिष्णुता ऐसे ऐतिहासिक विचार हैं, जिनके माध्यम से आधुनिक भारतीय विदेश नीति के शांतिपूर्ण और सहयोगात्मक आयामों का विश्लेषण किया जा सकता है। इस प्रकार, अशोक की विरासत प्राचीन भारतीय चिंतन और समकालीन अंतरराष्ट्रीय संबंधों के बीच तुलनात्मक अध्ययन के लिए एक महत्त्वपूर्ण आधार प्रदान करती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. भंडारकर, डी. आर. अशोक। कलकत्ता विश्वविद्यालय, 1932
2. धम्मिका, एस. द एडिक्ट्स ऑफ किंग अशोक: एन इंग्लिश रेंडरिंग। बुद्धिस्ट पब्लिकेशन सोसाइटी, 1993
3. हुल्श, ई. इन्स्क्रिप्शन्स ऑफ अशोक। क्लैरेंडन प्रेस, 1925
4. मजूमदार, आर. सी., संपादक। द हिस्ट्री एंड कल्चर ऑफ द इंडियन पीपल: द एज ऑफ इम्पीरियल यूनिटी। भारतीय विद्या भवन, 1951
5. मुखर्जी, राधाकुमुद। अशोक। मोतीलाल बनारसीदास, 1962
6. थापर, रोमिला। अशोक एंड द डिक्लाइन ऑफ द मौर्याज़। तृतीय संस्करण, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2012
7. थापर, रोमिला। अर्ली इंडिया: फ्रॉम द ओरिजिन्स टू ए.डी. 1300। यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस, 2002
8. बाशम, ए. एल. द वंडर दैट वाज़ इंडिया। रूपा, 2004
9. गोखले, बालकृष्ण गोविंद। अशोक मौर्य। एशिया पब्लिशिंग हाउस, 1966
10. सेन, अमूल्यचंद्र। अशोकाज़ एडिक्ट्स। इंडियन पब्लिसिटी सोसाइटी, 1956